प्रश्नपत्र 3 : लागत लेखांकन एवं वित्तीय प्रबन्ध

(PAPER 3 : COST ACCOUNTING AND FINANCIAL MANAGEMENT)

भाग I : लागत लेखांकन

प्रश्न

सामग्री

1. आदित्य ब्रदर्स शहर में नर्सिंग होम तथा पॉलीक्लिनिक को शल्य चिकित्सा के दस्ताने की आपूर्ति करता है। ये शल्य चिकित्सा के दस्ताने 10 जोड़ी के पैक में ₹ 250 प्रति पैक के मूल्य पर बेचे जाते है।

   नवम्बर 2015 के माह के लिये, यह अनुमान लगाया गया है कि शल्य चिकित्सा के दस्ताने के 60,000 पैक के लिये मांग उत्पन्न होगी। आदित्य ब्रदर्स ये दस्ताने निर्माता से ₹ 228 प्रति पैक पर 4 से 6 दिनों की समय सीमा पर खरीदते है। आदेश देने तथा संबंधित लागत ₹ 240 प्रति आदेश है। भण्डारण लागत औसत स्कंध विनियोग का 10% प्रति वर्ष है।

   अपेक्षित है :

   (i) आर्थिक आदेश मात्रा (EOQ) की गणना कीजिए।

   (ii) प्रति वर्ष आवश्यक आदेशों की संख्या गणना कीजिए।

   (iii) शल्य चिकित्सा के दस्तानों के आदेश देने तथा भण्डारण की कुल लागत की गणना कीजिए।

   (iv) निर्धारित कीजिए कब अगला आदेश दिया जाना चाहिए। (मानिये कि कम्पनी सुरक्षा स्टॉक रखती है तथा 360 कार्य दिवसों के वर्ष के साथ वर्तमान स्कंध स्तर 10,033 पैक है)।

श्रम

2. अर्नव लिमिटेड प्लास्टिक कुर्सियों का निर्माण तथा विक्रय करती है। यह एफ. डब्ल्यू. टेलर की प्रणाली का अनुकरण करते हुए कार्य दर प्रणाली के तहत श्रमिक दर उत्पादित कुर्सी को ₹ 12.50 प्रति इकाई की प्रमाप कार्य दर की मजदूरी भुगतान करती है। प्रति घंटा प्रमाप उत्पादन 4 कुर्सियां है। प्रत्येक श्रमिक को सोमवार से शुक्रवार 8 घंटे प्रतिदिन तथा शनिवार को 5 घंटे काम अपेक्षित है। वर्तमान में 118 श्रमिक हैं जो इस योजना के लिये हकदार हैं।

   कुर्सियों के निर्माण को प्रयुक्त किये जाने वाले यंत्र व संयंत्र काफी पहले खरीदे गये थे तथा श्रमिकों की कुशलता के साथ मिलान नहीं करते। श्रमिकों ने प्रबंध को अपनी चिंता से अवगत कराया है तथा समय पर आधार अर्थात् ₹ 50 प्रति घंटा पर मजदूरी तथा हाल्से प्रीमियम योजना के तहत प्रोत्साहन की मांग की है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

तीन परिदृश्यों के तहत नवम्बर, 2015 के माह के लिये उत्पादन के निम्नलिखित अनुमान किये गये है :

परिदृश्य	निकृष्ट दशा	अनुकूलतम दशा	श्रेष्ठ दशा
उत्पादन (इकाइयों में)	42,400	84,960	1,27,400

अपेक्षित है :

(अ) प्रत्येक परिदृश्य के तहत प्रति श्रमिक प्रति माह कुल मजदूरी तथा औसत मजदूरी की गणना कीजिए जब

(i) मजदूरी की चालू प्रणाली तथा प्रोत्साहन भुगतान प्रणाली का उपयोग किया जाता है।

(ii) समय दर मजदूरी तथा हाल्से प्रीमियम योजना के लिये श्रमिकों की मांग स्वीकार कर ली जाती है।

(ब) अक्टूबर 2015 माह के दौरान मि. K ने 1,050 इकाइयों का उत्पादन किया। उसकी आय पर क्या प्रभाव होगा यदि अगले माह में भी वह इकाइयों की समान संख्या उत्पादन करने योग्य होगा। क्या वह श्रमिकों की मांग का समर्थन करेगा?

(एक माह में 4 कार्यशील सप्ताह लीजिए)

उपरिव्यय

3. एक लघु स्तरीय उपक्रम–पी क्यू आर मैन्यूफैक्चर्स एक उत्पाद का उत्पादन करता है तथा फैक्ट्री के उत्पादन उपरिव्ययों को वसूल करने को मशीन घंटों पर आधारित एकल आवरण दर की नीति अपना रखी है। 2015–16 वर्ष के लिये वार्षिक बजटीय उत्पादन उपरिव्यय ₹ 44,00,000 है तथा बजटीय वार्षिक मशीन घंटे 2,20,000 हैं।

वित्तीय वर्ष 2015–16 वित्तीय वर्ष के पहले 6 माह की अवधि के लिये निम्नलिखित सूचनाएं पुस्तकों से प्राप्त की गयी हैं:

वास्तविक उत्पादन उपरिव्यय	₹ 24,88,200
उत्पादन उपरिव्ययों में शामिल राशि :	
न्यायालय के आदेश के अनुसार भुगतान	₹ 1,28,000
चालू वर्ष में पिछले वर्ष के व्यय	₹ 1,200
एक पंचाट के तहत हड़ताल अवधि के लिये श्रमिकों को भुगतान	₹ 44,000
अपलिखित अप्रचलित स्टोर्स	₹ 6,700

पहले 6 माह के लिये व्यवसाय के उत्पादन तथा विक्रय समंक निम्न प्रकार हैं :

उत्पादन :

निर्मित वस्तुएं	24,000 इकाइयां

© The Institute of Chartered Accountants of India

प्रगति में कार्य	18,000 इकाइयां
(प्रत्येक तरह 50% पूर्ण)	
बिक्री :	
निर्मित वस्तुएं	21,600 इकाइयां

अवधि के दौरान कार्य किये गये वास्तविक मशीन घंटे 1,16,000 थे। सूचना के विश्लेशण से यह प्रकट होता है कि अल्प/अति अवशोषण का 1/4 दूषित उत्पादन नीतियों के कारण था शेष लागतों में वृद्धि/कमी के आरोपित करने योग्य था।

अपेक्षित है :

(i) 2015–16 की 6 माह अवधि के लिये उत्पादन उपरिव्ययों के अल्प/अति अवशोषण की राशि का निर्धारण।

(ii) उत्पादन उपरिव्ययों के अल्प/अति अवशोषण का लेखांकन उपचार दर्शाना।

(iii) मदों पर अल्प/अति अवशोषित किये गये उपरिव्ययों को बांटना।

गैर–एकीकृत लेखांकन

4. 31 मार्च, 2015 को एक फर्म के लागत लेजर में निम्नलिखित शेष विद्यमान थे, जो दोहरी प्रविष्ट आधार पर अलग–अलग रखे जाते हैं :

	डेबिट (₹)	क्रेडिट (₹)
स्टोर्स लेजर नियंत्रण खाता	3,20,000	–
कार्य प्रगति में नियत्रंण खाता	1,52,000	–
निर्मित वस्तुएं नियंत्रण खाता	2,56,000	–
निर्माणी उपरिव्यय नियंत्रण खाता	–	28,000
लागत लेजर नियंत्रण खाता	–	7,00,000
	7,28,000	7,28,000

अगली तिमाही के दौरान निम्नलिखित मदें उत्पन्न हुईं :

	(₹)
निर्मित उत्पाद (लागत पर)	2,35,500
निर्माणी उपरिव्यय व्यय किये	91,000
कच्चा माल क्रय किया	1,36,000
कारखाना मजदूरी	48,000
अप्रत्यक्ष श्रम	20,600
विक्रय की लागत	1,68,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

उत्पादन को निर्गमित सामग्री	1,26,000
विक्रय वापसी (लागत पर)	8,000
आपूर्तिकर्ताओं को सामग्री वापसी	11,000
उत्पादन से वसूल निर्माणी उपरिव्यय	86,000

आपसे लागत लेखांकन अभिलेखों के अनुसार तिमाही के अंत पर लागत लेजर नियंत्रण खाता, स्टोर्स लेजर नियंत्रण खाता, प्रगति में कार्य नियंत्रण खाता, अंतिम स्कंध लेजर नियंत्रण खाता, निर्माणी उपरिव्यय नियंत्रण खाता, मजदूरी नियंत्रण खाता, विक्रय की लागत खाता तथा तलपट तैयार करना अपेक्षित है।

अनुबन्ध लागत लेखांकन

5. गैट–होम्स कन्स्ट्रक्शनस ने तीन भिन्न भवन अनुबंध किये हैं। 2014–15 वर्ष के लिये इन अनुबन्धों से संबंधित सूचना निम्न प्रकार है–

	अनुबंध –I (₹ राशि '000 में)	**अनुबंध –II (राशि '000 ₹ में)**	**अनुबंध –III (₹ राशि '000 में)**
अनुबंध का मूल्य	17,500	14,500	24,500
01-04-2014 को शेष :			
कार्य पूर्ण तथा प्रमाणित	--	4,100	8,150
साइट पर सामग्री	--	220	310
यंत्र व संयंत्र (WDV)	--	770	3,760
बकाया मजदूरी	--	48	104
लागत लेखांकन P&L खाते को लाभ हस्तांकन	--	--	350
वर्ष के दौरान लेन देन :			
साइट को निर्गमित सामग्री	870	2,150	4,020
श्रमिकों को मजदूरी भुगतान	450	1,160	2,180
साइट कर्मचारियों को वेतन	90	85	135
यात्रा व अन्य व्यय	18	24	32
साइट को निगर्मित संयंत्र	910	240	680
प्रधान कार्यालय व्ययों का विभाजन	110	90	126

© The Institute of Chartered Accountants of India

31-03-2015 को शेष :			
साइट पर सामग्री	215	152	12
यंत्र व संयंत्र (WDV)	728	808	3,552
बकाया मजदूरी	52	98	146
प्रमाणित कार्य का मूल्य	2,000	8,600	24,000
प्रमाणित नहीं कार्य की लागत	800	452	560

अनुबन्ध समझौते के अनुसार अनुबंध के प्रमाणित मूल्य का 15% ठेकेदाता द्वारा प्रतिधारण धन के रूप में रखा जाता है। अनुबंध III आने वाले माहों में पूरा होने वाली सूची में है, यद्यपि इस अनुबंध को पूरा करने को ₹ 7,20,000 की और अधिक लागत की आवश्यकता है।

अपेक्षित है :

(अ) तीनों अनुबन्धों के प्रत्येक के लिये अनुबंध विवरण बनाइये तथा काल्पनिक/अनुमानित लाभ/हानि की गणना कीजिए।

(ब) आंतरिक प्रबन्धकीय उद्देश्य के लिये लागत लेखांकन लाभ तथा हानि खाते को हस्तांतरित होने वाले लाभ/हानि की गणना कीजिए।

प्रक्रिया लागत लेखांकन

6. स्टार लिमिटेड खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के लिये रसायन सॉल्यूशन का निर्माण करती है। निर्माण प्रक्रियाओं की एक संख्या में होता है तथा कम्पनी प्रगति में कार्य तथा निर्मित वस्तुओं के मूल्य को FIFO प्रक्रिया लागत लेखांकन प्रणाली का उपयोग करती है। पिछले माह के अन्त पर, कारखाने में आग लगने की घटना घटी तथा माह के लिये प्रक्रिया परिचालन का अभिलेख वाली कुछ कागजी फाइल नष्ट हो गयी थी।

स्टार लिमिटेड को माह जिसमें आग लगने की घटना घटी के दौरान के लिये प्रक्रिया खाते तैयार करने को आपकी मदद की आवश्यकता है। आप माह की परिचालन क्रियाओं के बारे में कुछ सूचना एकत्रित करने में सक्षम हैं लेकिन कुछ सूचनाएं क्षति के कारण पुनः प्राप्त नहीं की जा सकतीं। निम्नलिखित सूचना बचायी गयी थीं :

- माह की शुरुआत पर प्रारंभिक प्रगति में कार्य 800 लीटर था, श्रम के लिये 70% पूर्ण तथा उपरिव्ययों के लिये 60% पूर्ण। प्रारंभिक प्रगति में कार्य ₹ 26,640 पर मूल्यांकित किया गया।
- माह के अंत पर अंतिम प्रगति में कार्य 160 लीटर था, श्रम के लिये 30% पूर्ण तथा उपरिव्ययों के लिये 20% पूर्ण।
- सामान्य हानि इनपुट का 10% है तथा माह के दौरान कुल हानियां 1,800 लीटर आंशिक आग से क्षति के कारण थीं।

© The Institute of Chartered Accountants of India

- निर्मित वस्तुएं भण्डारण गृह को भेजा गया आउटपुट 4,200 लीटर था।
- हानियों का ₹ 15 प्रति लीटर अवशिश्ट मूल्य था।
- सभी कच्चे माल प्रक्रिया के शुरुआत में जोड़े जाते हैं।
- माह के लिये लागत प्रति समतुल्य इकाई (लीटर) ₹ 90 निम्न प्रकार बनायी गयी है :

	(₹)
कच्चा माल	23
श्रम	7
उपरिव्यय	9
	39

अपेक्षित है :

(अ) माह के दौरान कच्चा माल इनपुट्स की मात्रा (लीटर में) गणना कीजिए।

(ब) प्रक्रिया से प्रत्याशित सामान्य हानि की मात्रा (लीटर में) तथा माह में अनुभव की गयी असामान्य हानि/लाभ की मात्रा (लीटर में) गणना कीजिए।

(स) माह के दौरान प्रक्रिया में जोड़े गये कच्चा माल, श्रम तथा उपरिव्ययों के मूल्य की गणना कीजिए।

(द) माह के लिये प्रक्रिया खाता बनाइये।

प्रमाप लागत लेखांकन

7. जिज्ञासा फार्मास्युटिकल्स लि. बढ़ते हुए बच्चों के लिये आहारीय पूरक 'फनकिड्स' के उत्पादन में लगी हुई है। यह 10 किग्रा के बैच में 'फनकिड्स' का उत्पादन करती है। 10 किग्रा 'फनकिड्स' के लिये आवश्यक प्रमाप सामग्री इनपुट नीचे दिये गये हैं :

सामग्री	मात्रा (किग्रा में)	प्रति किग्रा दर (₹ में)
Vita-X	5	110
Proto-D	3	320
Mine-L	3	460

मार्च 2015 माह के दौरान 'फनकिड्स' का वास्तविक उत्पादन 5,000 किग्रा था जिसके लिये एक बैच को प्रयोग की गयी सामग्री की वास्तविक मात्रा तथा उसके लिये चुकाये गये मूल्य निम्न प्रकार है :

सामग्री	मात्रा (किग्रा में)	प्रति किग्रा दर (₹ में)
Vita-X	6	115
Proto-D	2.5	330
Mine-L	2	405

© The Institute of Chartered Accountants of India

आपसे जिज्ञासा फार्मास्युटिकल्स के लिये मार्च 2015 के माह के लिये उपरोक्त दी गयी सूचना पर आधारित निम्नलिखित विचरण लागत करना अपेक्षित है :

(i) सामग्री लागत विचरण

(ii) सामग्री मूल्य विचरण

(iii) सामग्री उपयोग विचरण

(iv) सामग्री मिश्रण विचरण

(v) सामग्री उपज विचरण

प्रमाप लागत लेखांकन

8. T लिमिटेड एकल उत्पाद 'T–10' उत्पादन करता है तथा इसे ₹ 2,050 प्रति इकाई के स्थिर मूल्य पर विक्रय करता है। वर्ष 2014–15 वर्ष की पहली तिमाही के लिये उत्पादन तथा विक्रय डेटा निम्न प्रकार हैं :

	अप्रैल	मई	जून
बिक्री इकाइयों में	4,200	4,500	5,200
उत्पादन इकाइयों में	4,600	4,400	5,500

प्रत्येक माह के लिये वास्तविक/बजट सूचना निम्न प्रकार है :

प्रत्यक्ष सामग्री	4 किलोग्राम, ₹ 120 प्रति किलोग्राम पर
प्रत्यक्ष श्रम	6 घंटे प्रति घंटा ₹ 60 पर
परिवर्तनशील उत्पादन उपरिव्यय	प्रत्यक्ष श्रम का 150%
विक्रय कमीशन	विक्रय मूल्य का 15%
स्थिर उत्पादन उपरिव्यय	₹ 5,00,000
स्थिर विक्रय उपरिव्यय	₹ 95,000

तिमाही के प्रारंभ में प्रारंभिक स्कंध नहीं था। स्थिर उत्पादन उपरिव्यय ₹ 60,00,000 प्रतिवर्ष पर बजट अनुमान किये गये तथा 60,000 इकाइयां प्रतिवर्ष के बजटीय सामान्य उत्पादन दर उत्पाद आधार पर अवशोषित किये गये।

अपेक्षित है :

(अ) अवशोषण लागत लेखांकन सिद्धान्तों का उपयोग करते हुए तीन माहों के प्रत्येक के लिये लाभ विवरण तैयार कीजिए।

(ब) सीमांत लागत लेखांकन सिद्धान्तों का उपयोग करते हुए तीन माहों के प्रत्येक के लिये लाभ विवरण तैयार कीजिए।

(स) आपके उत्तर (अ) तथा (ब) में दी गयी लाभ या हानि की संख्याओं का समाशोधन प्रस्तुत करें।

© The Institute of Chartered Accountants of India

बजट तथा बजटीय नियंत्रण

9. G लिमिटेड 'M' तथा 'N' कहलाने वाले दो उत्पादों का निर्माण करते हैं। दोनों उत्पाद साधारण कच्चा माल Z का उपयोग करते हैं। कच्चा माल Z बाजार से ₹ 36 प्रति किग्रा की दर पर क्रय किया जाता है। कम्पनी ने आने वाले वर्ष के लिये स्कन्ध प्रबंध नीतियों के पुनरीक्षण का निश्चय किया है।

निम्नलिखित पूर्वानुमान सूचना 31 मार्च, 2016 (बजट अवधि) को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये विभागीय अनुमानों से प्राप्त की गयी है :

	उत्पाद M	उत्पाद N
बिक्री (इकाइयां)	28,000	13,000
वर्षान्त तक निर्मित माल स्टॉक वृद्धि	320	160
उत्पादन पश्चात् निरस्त दर (%)	4	6
सामग्री Z उपयोग (प्रति पूर्ण हुई इकाई, क्षय का शुद्ध)	5 kg	6 kg
सामग्री Z क्षय	10	5

अतिरिक्त सूचनायें :

- कच्चे माल का उपयोग अवधि काल में स्थिर दर पर रहने का अनुमान है।
- स्टॉक में एक इकाई रखने की वार्षिक लागत सामग्री लागत का 11% है।
- आदेश देने की लागत ₹ 320 प्रति आदेश है।
- G लिमिटेड के प्रबंधन ने निश्चय किया है कि कच्चे माल Z के लिये वर्ष में 40 आदेशों से अधिक नहीं होने चाहिए।

अपेक्षित है :

(अ) निम्नलिखित आंकड़ों के तहत 31 मार्च, 2016 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये क्रियात्मक बजट बनाइये :

(i) M तथा N उत्पादों के लिये उत्पादन बजट (इकाइयों में);

(ii) सामग्री Z के लिये क्रय बजट (किग्रा तथा मूल्य में)।

(ब) Z सामग्री के लिये आर्थिक आदेश मात्रा (किग्रा में) की गणना कीजिए।

(स) यदि बाजार में कच्चा माल Z के लिये एक अकेला आपूर्तिकर्ता है तथा आपूर्तिकर्ता एक बार में सामग्री Z की 4,000 किग्रा से अधिक विक्रय नहीं करता। प्रबंधन क्रय नीति तथा उत्पादन मात्रा मिश्रण को ध्यान में रखते हुए, उत्पाद M तथा N की इकाइयों की अधिक संख्या ज्ञात कीजिए जो उत्पादन की जा सकेगी।

विविध

10. (अ) उत्पादन लागतें परिभाषित कीजिए। उत्पादन लागतें गणना करने के लिये तीन विभिन्न उद्देश्यों का वर्णन कीजिए।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(ब) परिचालन लागतों से आप क्या समझते हैं? इसकी आवश्यक विशेषताओं का वर्णन कीजिए तथा बताइये इसे कहां उपयोगितापूर्वक स्थापित किया जा सकता है?

(स) संयुक्त लागतों का विभाजन अलग होने के बिन्दु तथा शुद्ध वसूली योग्य मूल्य विधि पर बाजार मूल्य उपयोग करते हुए संयुक्त उत्पादों के मध्य अलग करने के बिन्दु तक कैसे किया जाता है। विवेचना करें।

(द) वर्णन कीजिए :

(i) उत्पादन–पूर्व लागतें

(ii) शोध एवं विकास लागतें

(iii) प्रशिक्षण लागतें

सुझाये उत्तर/संकेत

1. (i) आर्थिक आदेश मात्रा की गणना :

$$EOQ = \sqrt{\frac{2\ A\ O}{Ci}} = \sqrt{\frac{2\ (60,000\text{ पैक}\ \ 12\text{ माह})\ \ ₹240}{₹228\ \ 10\%}}$$

$$= 3,893.3 \text{ पैक या } 3893 \text{ पैक}$$

(ii) प्रतिवर्ष आदेशों की संख्या :

$$\frac{\text{वार्षिक आवश्यकता}}{\text{E.O.Q}} = \frac{7,20,000\text{ पैक}}{3,893\text{ पैक}} = 184.9 \text{ या } 185 \text{ आदेश प्रति वर्ष}$$

(iii) आदेश देने तथा भण्डारण लागतें :

	(₹)
आदेश देने की लागत : 185 आदेश × ₹ 240	44,400.00
भण्डारण लागत : ½ (3,893 पैक × ₹ 228 का 10%)	44,380.20
आदेश देन तथा भण्डारण की कुल लागत	88,780.20

(iv) **अगले आदेश का समय** :

(अ) प्रत्येक आदेश द्वारा दिन की आवश्यकता पूरा करना

$$\text{आवश्यक दिनों की संख्या} = \frac{\text{कार्य दिवसों की संख्या}}{\text{एक वर्ष में आदेशों की संख्या}}$$

$$= \frac{360 \text{ दिवस}}{185 \text{ आदेश}} \ 1.94 \text{ दिवस आपूर्ति}$$

यह बताता है कि 3,893 पैक का प्रत्येक आदेश केवल 1.94 दिनों की आवश्यकता के लिये आपूर्ति करता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(ब) स्कन्ध द्वारा आवश्यकता पूरी किये जाने वाले दिन

$$= \frac{10,033 \text{ पैक}}{3,893 \text{ पैक}} \times 1.94 \text{ दिन}$$

= 5 दिवस आवश्यकता

(स) अगला आदेश देने के लिये समय अन्तराल

= दिनों की आवश्यकता के लिये छोड़ा हुआ स्कन्ध

– सुपुर्दगी का औसत समय सीमा

= 5 दिन – 5 दिन

= 0 दिन

2. (अ) **प्रति माह प्रति श्रमिक कुल मजदूरी तथा औसत मजदूरी की गणना :**

(i) **जब मजदूरी की चालू प्रणाली तथा प्रोत्साहन भुगतान अवधि अपनायी जाती है :**

		निकृष्टतम दशा	अनुकूलतम दशा	श्रेष्ठ दशा
I	प्रमाप उत्पादन (इकाइयों में) (45 घंटे × 4 इकाइयां × 4 सप्ताह × 118 श्रमिक)	84,960	84,960	84,960
II	उत्पादन की जाने वाली इकाइयों की संख्या	42,400	84,960	1,27,400
III	कार्यकुशलता {(II ÷ I) × 100}	49.91%	100%	149.95%
IV	भिन्नात्मक कार्य दर*	₹ 10 (₹ 12.5 × 0.8)	₹ 15 (₹ 12.5 × 1.2)	₹ 15 (₹ 12.5 × 1.2)
V	कुल मजदूरी (II × IV)	₹ 4,24,000	₹ 12,74,400	₹ 19,11,000
VI	औसत मजदूरी प्रति श्रमिक (V ÷ 118)	₹ 3,593.22	₹ 10,800	₹ 16,194.92

*100% से कम कार्यकुशलता के लिये, कार्य दर का 83% तथा 100% या अधिक कार्यकुशलता के लिये कार्य दर का 125% भी लिया जा सकता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(ii) **जब समय दर मजदूरी तथा हाल्से प्रीमियम योजना के लिये श्रमिकों की मांग स्वीकार की जाती है :**

		निकृष्टतम दशा	अनुकूलतम दशा	श्रेष्ठ दशा
I	उत्पादित की जाने वाली प्रत्याशित इकाइयों की संख्या (इकाइयां)	42,400	84,960	1,27,400
II	एक घंटों में इकाइयों की प्रमाप संख्या (इकाइयां)	4	4	4
III	प्रमाप घंटे (I ÷ II)	10,600	21,240	31,850
IV	प्रत्याशित कार्यशील घंटे (45 घंटे × 4 सप्ताह × 118 श्रमिक)	21,240	21,240	21,240
V	बचाये जाने वाले घंटे (III – IV)	--	--	10,610
VI	समय मजदूरी (IV × 50)	₹ 10,62,000	₹ 10,62,000	₹ 10,62,000
VII	हाल्से प्रीमियम योजना के तहत प्रोत्साहन $\left(\frac{1}{2}\times \text{बचाया समय} \times ₹50\right)$	--	--	₹ 2,65,250
VIII	कुल मजदूरी (VI +VII)	₹ 10,62,000	₹ 10,62,000	₹ 13,27,250
IX	औसत मजदूरी प्रति श्रमिक (VIII ÷ 118)	₹ 9,000	₹ 9,000	₹ 11,247.88

(ब) **मि. K की चालू मासिक आय में लाभ या हानि की गणना**

	अक्टूबर 2015 में अर्जित की गई मजदूरी :	
	प्रमाप उत्पादन इकाइयां (45 घंटे × 4 सप्ताह × 4 इकाइयां)	720 इकाइयां
	उत्पादित इकाइयों की संख्या	1,050 इकाइयां
	कार्यकुशलता	145.83%
	भिन्नात्मक कार्य दर (उपरोक्त भाग को संदर्भ करें)	₹ 15

© The Institute of Chartered Accountants of India

I	कुल मजदूरी (1,050 इकाइयों × ₹ 15)	₹ 15,750
	नयी योजना के तहत प्रत्याशित मजदूरी :	
	प्रमाप घंटे (1,050 इकाइयां ÷ 4 इकाई)	262.50 घंटे
	लिये जाने वाले प्रत्याशित घंटे (45 घंटे × 4 सप्ताह)	180 घंटे
	बचाया समय	82.50 घंटे
	समय मजदूरी (180 घंटे × ₹ 50)	₹ 9,000
	प्रोत्साहन राशि $\left(\frac{1}{2}\times \text{बचाया समय} \times ₹50\right)$	₹ 2,062.50
II	कुल प्रत्याशित मजदूरी	₹ 11,062.50
	प्रस्तावित योजना से हानि (II – I)	₹ 4,687.50

मि. K को अगले माह में साथी श्रमिकों की मांग के समर्थन की लागत ₹ 4,687,50 होगी।

3. (i) वर्ष 2015–2016 के पहले 6 माह की अवधि के दौरान उत्पादन उपरिव्ययों की अल्प/अति अवशोषित राशि

	राशि (₹)	राशि (₹)
अवधि के दौरान वास्तव में व्यय किये कुल उत्पादन उपरिव्यय		24,88,200
घटाएं : न्यायालय के आदेश के अनुसार श्रमिकों को राशि भुगतान की चालू वर्ष में पिछले वर्ष के बुक किये गये व्यय	1,28,000	
चालू वर्ष में पिछले वर्ष के बुक किये गये व्यय	1,200	
पंचाट के तहत हड़ताल अवधि के लिये मजदूरी भुगतान	44,000	
अप्रचलित स्टोर्स अपलिखित किये	6,700	(1,79,900)
		23,08,300
घटाएं : मशीन घंटा दर के अनुसार अवशोषित उत्पादन (1,16,000 घंटे × ₹ 20*)		23,20,000
उत्पादन उपरिव्ययों की अतिअवशोषित राशि		11,700

*बजटीय मशीन घंटा दर (एकल आवरण दर) = $\frac{₹44,00,000}{2,20,000 \text{ घण्टे}}$ = ₹ 20 प्रति घंटा

© The Institute of Chartered Accountants of India

(ii) **अति अवशोषित उत्पादन उपरिव्ययों का लेखांकन उपचार :**

चूंकि अति अवशोषित उपरिव्यय एक–चौथाई दोषपूर्ण उत्पादन नीतियों के कारण थे, यह असामान्य है, अतः लागत लेखांकन लाभ तथा हानि खाते को हस्तांतरित किया जाना चाहिए।

लागत लेखांकन लाभ तथा हानि खाते को हस्तांतरित की जाने वाली राशि है

$$= (11,700 \times \frac{1}{4}) = ₹\ 2,925$$

अति अवशोषित उत्पादन उपरिव्यय का शेष पूरक दर* लागू करने द्वारा प्रगति में कार्य, निर्मित वस्तुएं तथा विक्रय की लागत पर वितरित किया जाना चाहिए। वितरित की जाने वाली राशि है :

$$= (11,700 \times \frac{3}{4}) = ₹\ 8,775$$

$$\text{पूरक दर} = \frac{₹ 8,775}{33,000 \text{ इकाइयां}}$$

$$= ₹\ 0.2689 \text{ प्रति इकाई}$$

(iii) प्रगति में कार्य, निर्मित वस्तुएं तथा विक्रय की लागत पर अल्प अवशोषित उत्पादन उपरिव्ययों का विभाजन :

	समतुल्य पूर्ण इकाइयां	राशि (₹)
प्रगति में कार्य (18,000 इकाइयां × 50% × ₹ 0.2689)	9,000	2,420
निर्मित वस्तुएं (2,400 इकाइयां × ₹ 0.2689)	2,400	646
विक्रय की लागत (21,600 इकाइयां × ₹ 0.2689)	21,600	5,809
कुल	33,000	8,875

4. **लागत लेजर नियंत्रण खाता**

	(₹)		(₹)
स्टोर लेजर नियंत्रण खाता	11,000	प्रारंभिक शेष	7,00,000
शेष c/d	9,84,600	स्टोर लेजर नियंत्रण खाता	1,36,000
		निर्माणी उपरिव्यय नियंत्रण खाता	91,000
		मजदूरी नियंत्रण खाता	68,600
	9,95,600		9,95,600

© The Institute of Chartered Accountants of India

स्टोर लेजर नियंत्रण खाता

	(₹)		(₹)
प्रारंभिक शेष	3,20,000	प्रगति में कार्य नियंत्रण खाता	1,26,000
लागत लेजर नियंत्रण खाता	1,36,000	लागत लेजर नियंत्रण खाता (वापसी)	11,000
		शेष c/d	3,19,000
	4,56,000		4,56,000

प्रगति में कार्य नियंत्रण खाता

	(₹)		(₹)
प्रारंभिक शेष	1,52,000	अंतिम स्टॉक लेजर नियंत्रण खाता	2,35,500
मजदूरी नियंत्रण खाता	48,000	शेष c/d	1,76,500
स्टोर्स लेजर नियंत्रण खाता	1,26,000		
निर्माणी उपरिव्यय नियंत्रण खाता	86,000		
	4,12,000		4,12,000

निर्मित स्टॉक लेजर नियंत्रण खाता

	(₹)		(₹)
प्रारंभिक शेष	2,56,000	विक्रय की लागत	1,68,000
प्रगति में कार्य नियंत्रण खाता	2,35,500	शेष c/d	3,31,500
विक्रय की लागत खाता (विक्रय वापसी)	8,000		
	4,99,500		4,99,500

निर्माणी उपरिव्यय नियंत्रण खाता

	(₹)		(₹)
लागत लेजर नियंत्रण खाता	91,000	प्रारंभिक शेष	28,000
मजदूरी नियंत्रण खाता	20,600	प्रगति में कार्य नियंत्रण खाता	86,000
अति वसूली c/d	2,400		
	1,14,000		1,14,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

मजदूरी नियंत्रण खाता

	(₹)		(₹)
लागत लेजर को हस्तांतरण नियंत्रण खाता	68,600	प्रगति में कार्य नियंत्रण खाता	48,000
		निर्माणी उपरिव्यय नियंत्रण खाता	20,600
	68,600		68,600

विक्रय लागत खाता

	(₹)		(₹)
निर्मित स्टॉक लेजर नियंत्रण खाता	1,68,000	निर्मित स्टॉक लेजर नियंत्रण खाता (विक्रय वापिसी)	8,000
		शेष c/d	1,60,000
	1,68,000		1,68,000

तलपट

	(₹)	(₹)
स्टोर लेजर नियंत्रण खाता	3,19,000	
प्रगति में कार्य नियंत्रण खाता	1,76,500	
निर्मित स्टॉक लेजर नियंत्रण खाता	3,31,500	
निर्माणी उपरिव्यय नियंत्रण खाता	--	2,400
विक्रय की लागत खाता	1,60,000	
लागत लेजर नियंत्रण खाता	--	9,84,600
	9,87,000	9,87,000

5. (अ) **ठेका विवरण** **(राशि '000 ₹ में)**

	ठेका -I (₹)	**ठेका -II (₹)**	**ठेका -III (₹)**
01-04-2014 को शेष			
- कार्यपूर्ण तथा प्रमाणित	--	4,100	8,150
- साइट पर सामग्री	--	220	310
- यंत्र व सयंत्र	--	770	3,760
वर्ष के दौरान लेनदेन :			
निर्गमित सामग्री	870	2,150	4,020
श्रमिकों को मजदूरी भुगतान	450	1,160	2,180

© The Institute of Chartered Accountants of India

घटाएं : प्रारंभ में बकाया	--	(48)	(104)
जोड़ें : अंत में बकाया	52	98	146
साइट कर्मचारियों को वेतन	90	85	135
यात्रा तथा अन्य व्यय	18	24	32
साइट को यंत्र निर्गमित	910	240	680
प्रधान कार्यालय के व्ययों का विभाजन	110	90	126
कुल (A)	2,500	8,889	19,435
31-03-2015 को शेष :			
- साइट पर सामग्री	215	152	12
- यंत्र व संयंत्र	728	808	3,552
- प्रगति में कार्य:			
- प्रमाणित कार्य का मूल्य	2,000	8,600	24,000
- अप्रमाणित कार्य की लागत	800	452	560
अनुमानित अतिरिक्त लागत	--	--	720
कुल (B)	3,743	10,012	28,844
काल्पनिक / अनुमानित लाभ{(B) – (A)}	1,243	1,123	9,409

(ब) **आंतरिक उद्देश्य के लिये लागत लेखांकन लाभ तथा हानि को लाभ का हस्तांतरण**

	ठेका -I	**ठेका –II**	**ठेका -III**
ठेका का मूल्य	17,500	14,500	24,500
प्रमाणित कार्य का मूल्य	2,000	8,600	24,000
पूर्णता का प्रतिशत (%) $\left(\frac{\text{प्रमाणित कार्य}}{\text{अनुबन्ध का मूल्य}}\right) \times 100$	11.43	59.31	97.96
काल्पनिक / अनुमानित लाभ	1,243	1,123	9,409
लागत लेखांकन लाभ तथा हानि खाते के लाभ का हस्तांतरण	Nil	636.37 $\left(\frac{2}{3} \times ₹\ 1,123 \times 85\%\right)$	7,484.50 {(9,409 × 97.96% × 85%) - 350}

© The Institute of Chartered Accountants of India

6. **(अ) माह के दौरान कच्चा माल इनपुट की गणना**

प्रक्रिया में प्रविष्ट मात्राएं	लीटर	प्रक्रिया को छोड़ती मात्राएं	लीटर
प्रारंभिक प्रगति में कार्य	800	निर्मित वस्तुओं को हस्तांतरण	4,200
कच्चा माल इनपुट (शेष राशि)	5,360	प्रक्रिया हानियां	1,800
		अंतिम प्रगति में कार्य	160
	6,160		6,160

(ब) सामान्य हानि तथा असामान्य हानि/लाभ की गणना

	लीटर
माह के लिये कुल प्रक्रिया हानियां	1,800
सामान्य हानियां (10% इनपुट)	536
असामान्य हानियां (शेष राशि)	1,264

(स) प्रक्रिया को जोड़े जाने वाले कच्चा माल, श्रम तथा उपरिव्ययों की गणना

	सामग्री	श्रम	उपरिव्यय
प्रति समतुल्य इकाई लागत	23.00	7.00	9.00
समतुल्य इकाइयां (लीटर) (कार्यशील टिप्पणी संदर्भित)	4,824	4,952	5,016
समतुल्य इकाइयों की लागत	₹ 1,10,952	₹ 34,664	₹ 45,144
जोड़ें : सामान्य हानि का स्क्रैप मूल्य (536 इकाइयां × ₹ 15)	₹ 8,040	--	--
कुल मूल्य जोड़े	₹ 1,18,992	₹ 34,664	₹ 45,144

कार्यशील टिप्पणियां

समतुल्य इकाइयों (लीटर) का विवरण

इनपुट विवरण	इकाइयां	आउटपुट विवरण	इकाइयां	समतुल्य उत्पादन					
				सामग्री		श्रम		उपरिव्यय	
				इकाइयां	(%)	इकाइयां	(%)	इकाइयां	(%)
प्रारंभिक प्रगति में कार्य	800	इकाइयां पूर्ण							
उत्पत्ति इकाइयां	5,360	- प्रारंभिक प्रगति में कार्य	800	--	--	240	30	320	40
		- ताजा इनपुट	3,400	3,400	100	3,400	100	3,400	100
		सामान्य हानि	536	--	--	--	--	--	--

© The Institute of Chartered Accountants of India

		असामान्य हानि	1,264	1,264	100	1,264	100	1,264	100
		अंतिम प्रगति में कार्य	160	160	100	48	30	32	20
	6,160		6,160	4,824		4,952		5,016	

(द) **माह के लिये प्रक्रिया खाता**

	लीटर	राशि (₹)		लीटर	राशि (₹)
प्रारंभिक प्रगति में कार्य	800	26,640	अंतिम वस्तुएं	4,200	1,63,800
कच्चा माल	5,360	1,18,992	सामान्य हानि	536	8,040
मजदूरी	--	34,664	असामान्य हानि	1,264	49,296
उपरिव्यय	--	45,144	अंतिम प्रगति में कार्य	160	4,304
	6,160	2,25,440		6,160	2,25,440

7.

सामग्री	SQ* × SP	AQ** × SP	AQ** × AP	RSQ*** × SP
वीटा-X	₹ 2,75,000 (2,500 किग्रा × ₹ 110)	₹ 3,30,000 (3,000 किग्रा × ₹ 110)	₹ 3,45,000 (3,000 किग्रा × ₹ 115)	₹ 2,62,460 (2,386 किग्रा × ₹ 110)
प्रोटो-D	₹ 4,80,000 (1,500 किग्रा × ₹ 320)	₹ 4,00,000 (1,250 किग्रा × ₹ 320)	₹ 4,12,500 (1,250 किग्रा × ₹ 330)	₹ 4,58,240 (1,432 किग्रा × ₹ 320)
माइन-L	₹ 6,90,000 (1,500 किग्रा × ₹ 460)	₹ 4,60,000 (1,000 किग्रा × ₹ 460)	₹ 4,05,000 (1,000 किग्रा × ₹ 405)	₹ 6,58,720 (1,432 किग्रा × ₹ 460)
कुल	₹ 14,45,000	₹ 11,90,000	₹ 11,62,500	₹ 13,79,420

*वास्तविक उत्पादन के लिये सामग्री की प्रमाप मात्रा :

वीटा-X	$= \frac{5 \text{ किग्रा}}{10 \text{ किग्रा}} \times 5{,}000 \text{ किग्रा} = 2{,}500 \text{ किग्रा}$
प्रोटो-D	$= \frac{3 \text{ किग्रा}}{10 \text{ किग्रा}} \times 5{,}000 \text{ किग्रा} = 1{,}500 \text{ किग्रा}$
माइन-L	$= \frac{3 \text{ किग्रा}}{10 \text{ किग्रा}} \times 5{,}000 \text{ किग्रा} = 1{,}500 \text{ किग्रा}$

© The Institute of Chartered Accountants of India

**वास्तविक उत्पादन के लिये प्रयोग की जाने वाली सामग्री की वास्तविक मात्रा

वीटा-X	$= \frac{6 \text{ किग्रा}}{10 \text{ किग्रा}} \times 5{,}000 \text{ किग्रा} = 3{,}000 \text{ किग्रा}$
प्रोटो-D	$= \frac{2.5 \text{ किग्रा}}{10 \text{ किग्रा}} \times 5{,}000 \text{ किग्रा} = 1{,}250 \text{ किग्रा}$
माइन-L	$= \frac{2 \text{ किग्रा}}{10 \text{ किग्रा}} \times 5{,}000 \text{ किग्रा} = 1{,}000 \text{ किग्रा}$

***संशोधित प्रमाप मात्रा

वीटा –X	$= \frac{5 \text{ किग्रा}}{11 \text{ किग्रा}} \times 5{,}250 \text{ किग्रा} = 2{,}386 \text{ किग्रा}$
प्रोटो –D	$= \frac{3 \text{ किग्रा}}{11 \text{ किग्रा}} \times 5{,}250 \text{ किग्रा} = 1{,}432 \text{ किग्रा}$
माइन –L	$= \frac{3 \text{ किग्रा}}{11 \text{ किग्रा}} \times 5{,}250 \text{ किग्रा} = 1{,}432 \text{ किग्रा}$

(i) **सामग्री लागत विचरण**

= (प्रमाप मात्रा × प्रमाप मूल्य) – (वास्तविक मात्रा × वास्तविक मूल्य)

या = (SQ × SP) – (AQ × AP)

वीटा –X	= ₹ 2,75,000 – ₹ 3,45,000	= ₹ 70,000 (A)
प्रोटो –D	= ₹ 4,80,000 – ₹ 4,12,500	= ₹ 67,500 (F)
माइन–L	= ₹ 6,90,000 – ₹ 4,05,000	= ₹ 2,85,000 (F)
		₹ 2,82,500 (F)

(ii) **सामग्री मूल्य विचरण**

= वास्तविक मात्रा (प्रमाप मूल्य – वास्तविक मूल्य)

= (AQ × SP) – (AQ × AP)

वीटा–X	= ₹ 3,30,000 – ₹ 3,45,000	= ₹ 15,000 (A)
प्रोटो–D	= ₹ 4,00,000 – ₹ 4,12,500	= ₹ 12,500 (A)
माइन–L	= ₹ 4,60,000 – ₹ 4,05,000	= ₹ 55,000 (F)
		₹ 27,500 (F)

(iii) **सामग्री उपयोग विचरण**

= प्रमाप मूल्य (प्रमाप मात्रा – वास्तविक मात्रा)

या = (SQ × SP) – (AQ × SP)

© The Institute of Chartered Accountants of India

वीटा–X	= ₹ 2,75,000 – ₹ 3,30,000	= ₹ 55,000 (A)
प्रोटो–D	= ₹ 4,80,000 – ₹ 4,00,000	= ₹ 80,000 (F)
माइन–L	= ₹ 6,90,000 – ₹ 4,60,000	= ₹ 2,30,000 (F)
		= ₹ 2,55,000 (F)

(iv) **सामग्री मिश्रण विचरण**

= प्रमाप मूल्य (संशोधित प्रमाप मात्रा – वास्तविक मात्रा)

या = (RSQ × SP) – (AQ × SP)

वीटा–X	= ₹ 2,62,460 – ₹ 3,30,000	= ₹ 67,540 (A)
प्रोटो–D	= ₹ 4,58,240 – ₹ 4,00,000	= ₹ 58,240 (F)
माइन–L	= ₹ 6,58,720 – ₹ 4,60,000	= ₹ 1,98,720 (F)
		= ₹ 1,89,420 (F)

(v) **सामग्री उपज विचरण**

= प्रमाप मूल्य (प्रमाप मात्रा – संशोधित प्रमाप मात्रा)

या = (SQ × SP) – (RSQ × SP)

वीटा–X	= ₹ 2,75,000 – ₹ 2,62,460	= ₹ 12,540 (F)
प्रोटो–D	= ₹ 4,80,000 – ₹ 4,58,240	= ₹ 21,760 (F)
माइन–L	= ₹ 6,90,000 – ₹ 6,58,720	= ₹ 31,280 (F)
		= ₹ 65,580 (F)

8. **(अ) अवशोषण लागत लेखांकन के तहत लाभ का विवरण**

विवरण	अप्रैल (₹)	मई (₹)	जून (₹)
विक्रय (इकाइयां)	4,200	4,500	5,200
विक्रय मूल्य प्रति इकाई	2,050	2,050	2,050
विक्रय राशि (A)	86,10,000	92,25,000	1,06,60,000
बेचे गये माल की लागत :			
- प्रारंभिक स्टॉक @ ₹ 1,480	0	5,92,000	4,44,000
- उत्पादन लागत @ ₹ 1,480	68,08,000	65,12,000	81,40,000
- अंतिम स्टॉक @ ₹ 1,480	(5,92,000)	(4,44,000)	(8,88,000)
- अल्प/ (अति) अवशोषण	40,000	60,000	(50,000)
जोड़े : स्थिर विक्रय उपरिव्यय	95,000	95,000	95,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

विक्रय की मात्रा	(B)	63,51,000	68,15,000	77,41,000
लाभ	(A – B)	22,59,000	24,10,000	29,19,000

कार्यशील टिप्पणियां :

1. **पूर्ण उत्पादन लागत की गणना**

	(₹)
प्रत्यक्ष सामग्री (4 किग्रा × ₹ 120)	480
प्रत्यक्ष श्रम (6 घंटे × ₹ 60)	360
परिवर्तनशील उत्पादन उपरिव्यय (₹ 360 का 150%)	540
कुल परिवर्तनशील लागत	1,380
स्थिर उत्पादन उपरिव्यय $\left(\frac{₹60,00,000}{60,000 \text{ इकाइयां}}\right)$	100
	1,480

2. **प्रारंभिक तथा अंतिम स्टॉक की गणना**

	अप्रैल	मई	जून
प्रारंभिक स्टॉक	0	400	300
जोड़े : उत्पादन	4,600	4,400	5,500
घटाएं : बिक्री	4,200	4,500	5,200
अंतिम स्टॉक	400	300	600

3. **स्थिर उत्पादन उपरिव्यय के अल्प/अतिअवशोषण की गणना**

	अप्रैल (₹)	मई (₹)	जून (₹)
वास्तविक उपरिव्यय	5,00,000	5,00,000	5,00,000
अवशोषित उपरिव्यय	4,60,000 (4,600 इकाइयां× ₹ 100)	4,40,000 (4,600 इकाइयां × ₹ 100)	5,50,000 (4,600 इकाइयां × ₹ 100)
अल्प/(अति) अवशोषण	40,000	60,000	(50,000)

(ब) सीमांत लागत लेखांकन के तहत लाभ का विवरण

विवरण	अप्रैल (₹)	मई (₹)	जून (₹)
विक्रय (इकाइयां)	4,200	4,500	5,200
विक्रय मूल्य प्रति इकाई	2,050	2,050	2,050

© The Institute of Chartered Accountants of India

विक्रय राशि	86,10,000	92,25,000	1,06,60,000
घटाएं : परिवर्तनशील उत्पादन लागत	57,96,000	62,10,000	71,76,000
अंशदान	28,14,000	30,15,000	34,84,000
घटाएं : स्थिर उत्पादन उपरिव्यय	5,00,000	5,00,000	5,00,000
घटाएं : स्थिर विक्रय उपरिव्यय	95,000	95,000	95,000
लाभ	22,19,000	24,20,000	28,89,000

(स) सीमांत लागत लेखांकन से अवशोषण लागत लेखांकन के तहत लाभ का समाशोधन

विवरण	अप्रैल (₹)	मई (₹)	जून (₹)
अवशोषण लागत लेखांकन के तहत लाभ	22,59,000	24,10,000	29,19,000
जोड़े : प्रारंभिक स्टॉक	0	40,000 (400 × ₹ 100)	30,000 (300 × ₹ 100)
घटाएं : अंतिम स्टॉक	40,000 (400 × ₹ 100)	30,000 (300 × ₹ 100)	60,000 (600 × ₹ 100)
सीमांत लागत लेखांकन के तहत लाभ	22,19,000	24,20,000	28,89,000

9. (अ) (i) **उत्पादन बजट (इकाइयों में)**

(31 मार्च 2016 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये)

	उत्पाद M	उत्पाद N
बजटेड बिक्री (इकाइयां)	28,000	13,000
जोड़ें : अंतिम स्कंध में वृद्धि	320	160
उत्पादन की जाने वाली अच्छी इकाइयों की संख्या	28,320	13,160
उत्पादन पश्चात् निरस्त दर	4%	6%
उत्पादन की जाने वाली इकाइयों की संख्या	$29,500\left(\frac{28,320}{0.96}\right)$	$14,00\left(\frac{13,160}{0.94}\right)$

(ii) **सामग्री Z के लिये क्रय बजट (किग्रा तथा मूल्य में)**

	उत्पाद M	उत्पाद N
उत्पादन की जाने वाली इकाइयों की संख्या	29,500	14,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

उत्पादन की प्रति इकाई को सामग्री Z का उपयोग	5 किग्रा	6 किग्रा
उत्पादन के लिये आवश्यक सामग्री	1,47,500 किग्रा	84,000 किग्रा
क्रय की जाने वाली सामग्री	1,63,889 किग्रा $\left(\frac{1,47,500}{0.90}\right)$	88,421 किग्रा $\left(\frac{84,000}{0.95}\right)$
क्रय की जाने वाली कुल मात्रा		2,52,310 किग्रा
सामग्री Z की प्रति इकाई दर		₹ 36
कुल क्रय मूल्य		₹ 90,83,160

(ब) सामग्री Z के लिये आर्थिक आदेश की मात्रा की गणना

$$\text{आर्थिक आदेश मात्रा} = \sqrt{\frac{2\times 5,52,310\,\text{किग्रा}\times ₹320}{₹36\times 11\%}}$$

$$= \sqrt{\frac{16,14,78,400}{₹3.96}}$$

= 6,385.72 किग्रा

(स) चूंकि प्रतिवर्ष आदेश की अधिकतम संख्या 40 आदेशों से अधिक नहीं हो सकती तथा प्रति आदेश अधिकतम मात्रा जो क्रय की जा सकती है, 4,000 किग्रा है। अतः सामग्री Z की अधिकतम मात्रा जो उत्पादन के लिये उपलब्ध हो सकती है।

= 4,000 किग्रा × 40 आदेश = 1,60,000 किग्रा

	उत्पाद M	**उत्पाद N**
समान उत्पादन मिश्रण बनाये रखने को उत्पादन के लिये आवश्यक सामग्री	1,03,929 किग्रा $\left(1,60,000\times\frac{1,63,889}{2,52,310}\right)$	56,071 किग्रा $\left(1,60,000\times\frac{88,421}{2,53,310}\right)$
घटाएं : प्रक्रिया क्षय	10,393 किग्रा	2,804 किग्रा
उत्पादन के लिये उपलब्ध शुद्ध सामग्री	93,536 किग्रा	53,267 किग्रा
उत्पादन की जाने वाली इकाइयां	18,707 इकाइयां $\left(\frac{93,536\,\text{किग्रा}}{5\,\text{किग्रा}}\right)$	8,878 इकाइयां $\left(\frac{53,267\,\text{किग्रा}}{6\,\text{किग्रा}}\right)$

© The Institute of Chartered Accountants of India

10. (अ) **उत्पाद लागतों की परिभाषा :** उत्पाद लागतें स्कंध योग्य लागते हैं। ये लागते हैं जो उत्पाद को अभिहस्तांकित हैं। सीमांत लागत लेखांकन के तहत परिवर्तनीय निर्माणी लागतें तथा अल्प अवशोषित लागत लेखांकन, कुल निर्माणी लागतें उत्पाद लागतें बनाती हैं।

उत्पाद लागतें गणना करने के उद्देश्य :

उत्पाद लागतें गणना करने के लिये तीन विभिन्न उद्देश्य निम्न प्रकार हैं :

(i) **वित्तीय विवरण तैयार करना :** यहां स्कन्ध योग्य लागतों पर फोकस है।

(ii) **उत्पाद मूल्य निर्धारण :** यह महत्वपूर्ण उद्देश्य है जिसके लिये उत्पाद लागतें उपयोग की जाती हैं। इस उद्देश्य के लिये, मूल्य शृंखला के साथ क्षेत्रों की लागत उपभोक्ता को उत्पाद उपलब्ध कराने को शामिल की जानी चाहिए।

(iii) **सरकारी एजेन्सियों के साथ अनुबन्ध करना :** इस उद्देश्य के लिये सरकारी एजेन्सियां ठेकेदारों को लागत जोड़ अनुबन्ध के तहत् शोध तथा विकास तथा विपणन लागतें वसूल करने की अनुमति नहीं देती।

(ब) परिचालन लागतें उपक्रमों द्वारा व्यय की जाने वाली लागतें है। जो किसी उत्पाद का निर्माण नहीं करती बल्कि सेवा प्रदान करती हैं। उदाहरण के लिये ऐसे उपक्रम है–परिवहन संस्थाए, गैस ऐजेन्सियां, विद्युत उपक्रम, अस्पताल, थियेटर इत्यादि। सेवा उपक्रमों द्वारा भिन्न प्रकृति की सेवायें करने के कारण, लागत प्रणाली, स्पष्टतः भिन्न उपयोग की जाती है जो निर्माणी संस्थाओं में उपयोग की जाती है। परिचालन लागतों की आवश्यक विशेषताएं निम्न प्रकार हैं–

(1) परिचालन लागतें तीन श्रेणियों में श्रेणीबद्ध की जा सकती हैं। उदाहरण के लिये परिवहन उपक्रमों की दशा में ये तीन श्रेणियां निम्न प्रकार है :

(अ) **परिचालन तथा रनिंग शुल्क :** यह परिवर्तनीय प्रकृति के व्यय शामिल करता है। उदाहरण के लिये पेट्रोल, डीजल, चिकनाई, तेल तथा ग्रीस इत्यादि पर व्यय।

(ब) **रखरखाव शुल्क :** ये व्यय अर्द्ध–परिवर्तनीय प्रकृति के होते हैं तथा टायर तथा ट्यूब की लागत, मरम्मत तथा रखरखाव, स्पेयर्स तथा सहायक उपकरण, जीर्णोद्धार इत्यादि शामिल है।

(स) **स्थायी या स्थायित्व प्रभार :** ये गैराज किराया बीमा सड़क लाइसेंस, मूल्य ह्रास, पूंजी पर ब्याज परिचालन प्रबंधक का वेतन इत्यादि को शामिल करते हैं।

(2) लागत इकाई समग्र में जैसे यात्री–मील, किलोवाट–घंटा इत्यादि उपयोग करते हैं। यह परिवहन, एयरलाइन्स, बस सेवा इत्यादि की सभी फर्मों तथा वितरण उपक्रमों की सभी फर्मों द्वारा क्रियान्वित किया जाता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(स) **संयुक्त उत्पादों के मध्य संयुक्त लागत का विभाजन प्रयोग करते हुए :**

विभक्तीकरण के बिन्दु पर बाजार मूल्य

यह विधि संयुक्त उत्पादों की संयुक्त लागतें अलग होने के बिन्दु तक विभाजन के लिये उपयोग की जाती हैं। इसे लागू करना कठिन है यदि अलग करने के बिन्दु पर उत्पाद का बाजार मूल्य उपलब्ध नहीं है। यह उपयोगी विधि है जहां आगे की प्रसंस्करण लागतें गैर आनुपातिक रूप से व्यय की जाती हैं।

शुद्ध वसूली योग्य मूल्य विधि :

संयुक्त उत्पादों (निर्मित चरण पर) के विक्रय मूल्य से निम्नलिखित घटाया जाता है :

- अनुमानित लाभ मार्जिन
- विक्रय तथा वितरण व्यय, यदि कोई हैं
- विभाजन के बाद की लागतें

इस प्रकार प्राप्त परिणामतः अंक संयुक्त उत्पादों की शुद्ध वसूली योग्य मूल्य के रूप में जाना जाता है। संयुक्त लागतें शुद्ध वसूली योग्य मूल्य के अनुपात में विभाजन की जाती हैं।

(द) (i) **पूर्व उत्पादन लागतें :** ये लागतें विकास लागतों का भाग बनती हैं, परीक्षण उत्पाद में व्यय की जाती हैं, औपचारिक उत्पादन से पूर्व की हैं। ये लागतें व्यय की जाती है, जब एक नयी फैक्ट्री स्थापना की प्रक्रिया में है, या एक नयी परियोजना की शुरुआत की है या एक नया उत्पाद या लाइन ली जा रही है कोई स्थापित या औपचारिक उत्पादन नहीं है जिससे ऐसी लागतें वसूल की जा सकें।

(ii) **शोध तथा विकास लागतें :** शोध लागतें वे लागतें है जो नयी वैज्ञानिक या तकनीकी ज्ञान या समझ प्राप्त करने की संभावना के साथ किये जाने वाले मूल तथा योजनाबद्ध अन्वेषण के लिये व्यय की जाती है।

विकास लागतें वे लागतें हैं जो व्यापारिक उत्पादन या उपयोग प्रारंभ करने से पूर्व नयी या काफी हद तक विकसित सामग्री, उपकरण, उत्पाद, प्रसंस्कण, प्रणालियां या सेवायें उत्पादन के लिये योजना या डिजायन के शोध निष्कर्षों या अन्य ज्ञान उपयोग करने में व्यय की जाती हैं।

(iii) **प्रशिक्षण लागतें :** लागतें जो श्रमिकों, प्रशिक्षुओं कार्यकारियों इत्यादि को प्रशिक्षण प्रदान करने के सबंध में व्यय की जाती हैं। प्रशिक्षण लागतों में नये प्रशिक्षणार्थियों को मजदूरी तथा वेतन भुगतान, प्रशिक्षकों को फीस भुगतान, प्रशिणार्थियों के प्रशिक्षण में उपयोग सामग्री तथा गुण की लागत, प्रशिक्षण केन्द्र से संबंधित लागतें, कम उत्पादन तथा अतिरिक्त बर्बादी के कारण हानि इत्यादि शामिल करते हैं। इसके बाद प्रशिक्षण विभाग की कुल लागत उत्पादन केन्द्रों पर विभाजित कर दी जाती है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

भाग II : वित्तीय प्रबंध

प्रश्न

मुद्रा का समय मूल्य

1. आपको 10 वर्षों के अन्त पर ₹ 1,00,000 की राशि की आवश्यकता है। आप जानते हैं कि 6% की ब्याज दर पर आज कुछ एकमुश्त राशि जमा कर या आज के वर्ष से शुरू कर एक बैंक खाते में समान भुगतान कर जिस पर आप 6% ब्याज कमा सकते हैं, श्रेष्ठ कर सकते हैं, पता लगाइये–

   (i) आज कितनी राशि जमा की जाये या

   (ii) कितनी राशि वार्षिक जमा की जाये?

अनुपात विश्लेषण :

2. निम्नलिखित विवरण पर आधारित तिरुपति लि. की विभिन्न सम्पत्तियां तथा दायित्व प्रदर्शित कीजिए :

स्थायी सम्पत्ति आवर्त अनुपात	8 गुना
पूंजी आवर्त अनुपात	2 गुना
स्कन्ध आवर्त	8 गुना
प्राप्य आवर्त	4 गुना
देय आवर्त	6 गुना
सकल लाभ अनुपात	25%

वर्ष के दौरान सकल लाभ ₹ 8,00,000 है। कोई भी दीर्घकालीन ऋण या अधिविकर्ष नहीं है। संचय तथा आधिक्य की राशि ₹ 2,00,000 है। वर्ष के अंत में स्कन्ध प्रारंभ के स्कन्ध से ₹ 20,000 अधिक है।

रोकड़ प्रवाह विश्लेषण

3. **31 मार्च, 2014 तथा 2015 को RIO लि. का चिट्ठा निम्न प्रकार है:**

दायित्व	31.3.14 (₹)	31.3.15 (₹)	सम्पत्ति	31.3.14 (₹)	31.3.15 (₹)
समता अंश पूंजी	10,00,000	10,00,000	ख्याति	1,00,000	80,000
8% पूर्वाधिकार अंश पूंजी	2,00,000	3,00,000	भूमि व भवन	7,00,000	6,50,000
सामान्य संचय	1,20,000	1,45,000	यंत्र व सयंत्र	6,00,000	6,60,000
प्रतिभूति प्रीमियम	--	25,000	विनियोग (गैर–व्यापारिक)	2,40,000	2,20,000
लाभ व हानि खाता	2,10,000	3,00,000	स्टॉक	4,00,000	3,85,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

11% ऋणपत्र	5,00,000	3,00,000	देनदार	2,88,000	4,15,000
लेनदार	1,85,000	2,15,000	नकद तथा बैंक	88,000	93,000
कर के लिये आयोजन	80,000	1,05,000	पूर्वदत्त व्यय	15,000	11,000
प्रस्तावित लाभांश	1,36,000	1,44,000	ऋणपत्र शोधन पर प्रीमियम	--	20,000
	24,31,000	25,34,000		24,31,000	25,34,000

अतिरिक्त सूचनाएं :

1. वर्ष के दौरान विनियोग ₹ 15,000 के लाभ पर बेचे गये।
2. वर्ष के दौरान एक पुरानी मशीन ₹ 80,000 की लागत की ₹ 36,000 में बेची गयी। इसका ह्रासित मूल्य ₹ 45,000 था।
3. यंत्र व संयंत्र के प्रारंभिक शेष पर मूल्य ह्रास 20% की दर से वसूला जाता है।
4. भूमि व भवन का क्रय या विक्रय नहीं है।
5. वर्ष के दौरान कर के लिये आयोजन ₹ 96,000 किया गया।
6. वर्ष के दौरान पूर्वाधिकार अंश नकद के प्रतिफल के लिये जारी किये गये।

आपसे तैयार करना अपेक्षित है :

(i) AS-3 के अनुसार रोकड़ प्रवाह विवरण

(ii) कार्यशील पूंजी में परिवर्तन की तालिका।

पूंजी की लागत

5. नन्या लिमिटेड अपनी आधुनिकीकरण योजना पूरी करने के लिये ₹ 10 लाख की अतिरिक्त पूंजी की इच्छा रखती है। इसके पास विनियोग उद्देश्यों के लिये प्रतिधारित अर्जनों के रूप में ₹ 3,00,000 हैं। आगे का विवरण निम्न प्रकार है :

ऋण/समता मिश्रण	40%/60%
ऋण की लागत (कर पूर्व)	
₹ 1,80,000 तक	10%
₹ 1,80,000 के बाद	16%
प्रति अंश आय	₹ 4
लाभांश भुगतान	₹ 2
लाभांश में प्रत्याशित वृद्धि दर	10%
प्रति अंश चालू बाजार मूल्य	₹ 44
कर दर	50%

© The Institute of Chartered Accountants of India

आपसे अपेक्षित है :

(अ) अतिरिक्त वित्त जुटाने के लिये स्वरूप सुनिश्चित करना।

(ब) अतिरिक्त ऋण की कर पश्चात् औसत लागत की गणना।

(स) समता की लागत तथा प्रतिधारित अर्जनों की लागत की गणना करना, तथा

(द) पूंजी की कुल भारित औसत लागत ज्ञात करना (कर पश्चात्)।

पूंजी संरचना निर्णय

6. कम्पनी P तथा Q जोखिम तत्वों सहित सभी तरह से एकसमान है सिवाय ऋण/समता के लिये, कम्पनी P ने ₹ 18 लाख के 10% ऋणपत्र निर्गमित किये हैं जब कि कम्पनी Q गैर–उत्तोलक है। दोनों कम्पनियों ने उनकी ₹ 30 लाख की कुल सम्पत्तियों पर ब्याज तथा कर पूर्व 20% अर्जित किया है।

50% की कर दर तथा सभी समता कम्पनी से 15% की पूंजीकरण दर मानिये। कम्पनी P तथा Q कम्पनियों का मूल्य (i) शुद्ध आय दृष्टिकोण (ii) शुद्ध परिचालन आय दृष्टिकोण मानते हुए गणना कीजिए।

उत्तोलक

6. एक फर्म की बिक्री ₹ 75,00,000, परिवर्तनशील लागत 56% तथा स्थिर लागत ₹ 6,00,000 है। इसका 9% पर ऋण ₹ 45,00,000 का तथा समता ₹ 55,00,000 की है।

(i) फर्म के विनियोग पर प्रत्याय (ROI) क्या है?

(ii) क्या इसका अनुकूल वित्तीय उत्तोलक है?

(iii) यदि फर्म उस उद्योग से संबंध रखती है जिसका पूंजी आवर्त 3 है, क्या उच्च या निम्न पूंजी आवर्त है?

(iv) फर्म का परिचालन, वित्तीय तथा संयुक्त उत्तोलक क्या है?

(v) यदि बिक्री 10% से बढ़ती है, EBIT किस प्रतिशत से बढ़ेगी?

(vi) विक्रय के किस स्तर पर फर्म का EBT शून्य के बराबर होगा?

(vii) यदि EBIT 20% से बढ़ती है, EBT किस प्रतिशत से बढ़ेगी?

पूंजी बजटन

7. BT पैथोलोजी लैब लि. एक एक्सरे मशीन का उपयोग कर रही है जो उसके उपयोगी जीवन के अंत पर पहुंच चुकी है। दो विभिन्न ब्राण्डों की समान विशेषताओं सहित नयी एक्सरे मशीन क्रय के लिये उपलब्ध है–

ब्राण्ड	मशीन की लागत	मशीन का जीवन	रखरखाव लागत			मूल्य ह्रास की दर
			1-5 वर्ष	6-10 वर्ष	11-15 वर्ष	
XYZ	6,00,000	15 वर्ष	₹ 20,000	₹ 28,000	₹ 39,000	4%
ABC	4,50,000	10 वर्ष	₹ 31,000	₹ 53,000	--	6%

© The Institute of Chartered Accountants of India

उपरोक्त दोनों मशीनों का अवशिष्ट मूल्य पहले वर्ष में क्रय मूल्य के 1/3 से गिर जायेगा तथा इसके पश्चात् उपरोक्त वर्णित दर पर ह्रासित हो जायेगा।

वैकल्पिक रूप में, ABC ब्राण्ड की मशीन को किराये पर लेकर निम्नलिखित नियम तथा शर्तों पर उपयोग के पश्चात् स्वामी को लौटा दी जायेगी :

- प्रत्येक वर्ष के प्रारंभ में वार्षिक किराया भुगतान किया जावेगा तथा पहले वर्ष के लिये यह ₹ 1,02,000 होगा।
- आगे के 4 वर्षों के लिये वार्षिक किराया ₹ 1,02,500 होगा।
- वार्षिक किराया अंतिम 5 वर्षों के लिये ₹ 1,09,950 होगा।
- BT लैब द्वारा किराया अनुबंध पैनल्टी के रूप में ₹ 1,00,000 के भुगतान द्वारा समाप्त किया जा सकेगा। यह पेनल्टी किराया अनुबंध की अवधि के प्रत्येक वर्ष ₹ 10,000 से घट जायेगी।

आपसे अपेक्षित है :

(अ) मानते हुए कि मशीन का उपयोग 20 वर्षों की अवधि के जारी रहेगा, सलाह दीजिए एक्सरे मशीन का कौन सा ब्रांड अधिग्रहण किया जाये?

(ब) कौन सा विकल्प अधिक मितव्ययी है यदि मशीन 5 वर्षों की अवधि के लिये उपयोग की उम्मीद है?

BT लैब की पूंजी की लागत 12% है।

देय का प्रबंध (लेनदार)

8. A लिमिटेड निर्माणी व्यवसाय में है तथा यह X लिमिटेड से नियमित आधार पर कच्चा माल प्राप्त करता है। अनुबंध की शर्तों के अनुसार भुगतान क्रय के 40 दिनों के भीतर किया जाना चाहिए। यद्यपि A लिमिटेड के पास क्रय के 10वें दिन या पूर्व में X लिमिटेड को 98.50 ₹ प्रति 100 बकाया भुगतान करने का विकल्प है। क्या A लिमिटेड को बट्टे का प्रस्ताव यह मानते हुए स्वीकार करना चाहिए कि X लिमिटेड के साथ A लिमिटेड की औसत बिलिंग ₹ 10,00,000 है तथा वैकल्पिक निवेश आय 15% की प्रत्याय है तथा कम्पनी बीजक का भुगतान करती है।

कार्यशील पूंजी की वित्त व्यवस्था

9. निम्नलिखित सूचना 31 मार्च, 2015 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये पूजा लिमिटेड द्वारा अनुमान लगायी गयी है :

	1 अप्रैल, 2014 को शेष (₹)	**31 मार्च, 2015 को शेष** (₹)
कच्चा माल	45,000	65,356
अर्द्धनिर्मित कार्य	35,000	51,300

© The Institute of Chartered Accountants of India

निर्मित वस्तुएं	60,181	70,175
देनदार	1,12,123	1,35,000
लेनदार	50,079	70,469
कच्चे माल का वार्षिक क्रय (सभी उधार)		4,00,000
उत्पादन की वार्षिक लागत		7,50,000
बेचे गये माल की वार्षिक लागत		9,15,000
वार्षिक परिचालन लागत		9,50,000
वार्षिक बिक्री (सभी उधार)		11,00,000

आप एक वर्ष को 365 दिन के बराबर ले सकते हैं।

आपसे गणना अपेक्षित है :

(i) शुद्ध परिचालन चक्र अवधि

(ii) एक वर्ष में परिचालन चक्रों की संख्या

(iii) परिचालन चक्रों का उपयोग करते हुए कार्यशील पूंजी की आवश्यकता की राशि।

विविध

10. (अ) "लाभ अधिकतमीकरण सक्रिय रूप से व्यवहार्य कसौटी नहीं है।" इस पर टिप्पणी कीजिए।

(ब) निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(i) सेतु वित्त

(ii) फ्लोटिंग दर बॉण्ड

(iii) पैकिंग साख

(स) "वित्तीय उत्तोलक एक दुधारू तलवार है।" टिप्पणी कीजिए।

सुझाये उत्तर/संकेत

1. (i) $$PV = \frac{FV}{(1+k)^n} \quad \text{or} \quad PV = \frac{₹1,00,000}{(1+0.06)^{10}} = ₹\ 55,839.48$$

(ii) $$FVA\ (k,n) = A\ \frac{\left[(1+k)^n - 1\right]}{k}$$

$$A = \frac{FVA\,(k,n)}{\left[\frac{(1+k)^n - 1}{k}\right]} = \frac{₹1,00,000}{13,181} = ₹\ 7,586.68$$

© The Institute of Chartered Accountants of India

2. (अ) सकल लाभ अनुपात $= \frac{\text{सकल लाभ}}{\text{बिक्री}} = 25\%$

$$\text{बिक्री} = \frac{\text{सकल लाभ}}{5} \times 100 = \frac{₹8,00,000}{25} \times 100 = ₹\ 32,00,000$$

(ब) विक्रय की लागत = बिक्री − सकल लाभ

= ₹ 32,00,000 − ₹ 8,00,000

= ₹ 24,00,000

(स) प्राप्य आवर्त $= \frac{\text{बिक्री}}{\text{देनदार}} = 4$

$$= \text{देनदार} = \frac{\text{बिक्री}}{4} = \frac{₹32,00,000}{4} = ₹\ 8,00,000$$

(द) स्थायी सम्पत्ति आवर्त $= \frac{\text{विक्रय की लागत}}{\text{स्थायी सम्पत्तियां}} = 8$

$$\text{स्थायी सम्पत्तियां} = \frac{\text{विक्रय की लागत}}{8} = \frac{₹24,00,000}{8} = ₹\ 3,00,000$$

(य) स्कन्ध आवर्त $= \frac{\text{विक्रय की लागत}}{\text{औसत स्कन्ध}} = 8$

$$\text{औसत स्कन्ध} = \frac{\text{विक्रय की लागत}}{8}$$

$$= \frac{₹24,00,000}{8} = ₹\ 3,00,000$$

$$\text{औसत स्कन्ध} = \frac{\text{प्रारम्भिक स्कन्ध} + \text{अन्तिम स्कन्ध} + 20,000}{2}$$

$$\text{औसत स्कन्ध} = \frac{\text{प्रारम्भिक स्कन्ध} + \text{अन्तिम स्कन्ध}}{2}$$

औसत स्कन्ध = प्रारंभिक स्कन्ध + ₹ 10,000

प्रारंभिक स्कन्ध = औसत स्कन्ध − ₹ 10,000

= ₹ 3,00,000 − ₹ 10,000

= ₹ 2,90,000

अंतिम स्कन्ध = प्रारंभिक स्कन्ध + ₹ 20,000

= ₹ 2,90,000 + ₹ 20,000

= ₹ 3,10,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

(र) $\text{देय आवर्त} = \frac{\text{क्रय}}{\text{लेनदार}} = 6$

क्रय = विक्रय की लागत + स्कन्ध में वृद्धि

= ₹ 24,00,000 + ₹ 20,000

= ₹ 24,20,000

$\text{लेनदार} = \frac{\text{क्रय}}{6} = \frac{₹\,24,00,000}{2} = ₹\,4,03,333$

(ल) $\text{पूंजी आवर्त} = \frac{\text{विक्रय की लागत}}{\text{नियोजित पूंजी}} = 2$

$\text{नियोजित पूंजी} = \frac{\text{विक्रय की लागत}}{2} = \frac{₹\,24,00,000}{2} = ₹\,12,00,000$

(व) पूंजी = नियोजित पूंजी – संचय व आधिक्य

= ₹ 12,00,000 – ₹ 2,00,000 = ₹ 10,00,000

तिरुपति लिमिटेड का चिट्ठा

दायित्व	राशि (₹)	सम्पत्ति	राशि (₹)
पूंजी	10,00,000	स्थायी सम्पत्तियां	3,00,000
संचय व आधिक्य	2,00,000	स्कन्ध	3,10,000
लेनदार	4,03,333	देनदार	8,00,000
		अन्य चालू सम्पत्तियां	1,93,333
	16,03,333		16,03,333

3. (i) **रोकड़ प्रवाह विवरण**

(31 मार्च, 2015 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये)

	(₹)	(₹)
(अ) परिचालन क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह		
31.3.2015 को लाभ–हानि खाता		3,00,000
घटाएं : 31.3.2014 को लाभ–हानि खाता		2,10,000
		90,000
जोड़े : सामान्य संचय में हस्तांतरण	25,000	
कर के लिये प्रावधान	96,000	

© The Institute of Chartered Accountants of India

प्रस्तावित लाभांश	1,44,000	2,65,000
कर पूर्व लाभ		3,55,000
मूल्य ह्रास के लिये समायोजन :		
भूमि व भवन (भवन पर)	50,000	
यंत्र व संयंत्र	1,20,000	1,70,000
विनियोग की बिक्री पर लाभ		(15,000)
यंत्र व संयंत्र के विक्रय पर हानि		9,000
ख्याति अपलिखित		20,000
11% ऋणपत्रों पर ब्याज (टिप्पणी देखें)		33,000
कार्यशील पूंजी परिवर्तन से पूर्व परिचालन लाभ		5,72,000
कार्यशील पूंजी परिवर्तनों के लिये समायोजन :		
पूर्वद त्त व्ययों में कमी		4,000
स्कन्ध में कमी		15,000
देनदारों में वृद्धि		(1,27,000)
लेनदारों में वृद्धि		30,000
परिचालन से रोकड़ सृजन		4,94,000
आयकर चुकाया		(71,000)
परिचालन क्रियाओं से शुद्ध रोकड़ अर्न्तवाह (अ)		4,23,000
(ब) विनियोग क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह		
विनियोग की बिक्री		35,000
यंत्र व संयंत्र की बिक्री		36,000
यंत्र व संयंत्र का क्रय		(2,25,000)
विनियोग क्रियाओं से शुद्ध रोकड़ बर्हिवाह (ब)		(1,54,000)
(स) वित्तीय क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह		
पूर्वाधिकार अंशों का निगर्मन		1,00,000
पूर्वाधिकार अंशों के निगर्मन पर प्राप्त प्रतिभूति प्रीमियम		25,000
ऋणपत्रों के शोधन पर प्रीमियम		(2,20,000)
लाभांश चुकाया		(1,36,000)

© The Institute of Chartered Accountants of India

ऋणपत्र धारकों को ब्याज दिया		(33,000)
वित्तीय क्रियाओं से शुद्ध रोकड़ बर्हिवाह (स)		(2,64,000)
वर्ष के दौरान रोकड़ तथा रोकड़ तुल्य में शुद्ध वृद्धि **(अ + ब + स)**		5,000
वर्ष के प्रारंभ में रोकड़ तथा रोकड़ तुल्य		88,000
वर्ष के अंत में रोकड़ तथा रोकड़ तुल्य		93,000

कार्यशील टिप्पणियां :

1. **कर के लिये आयोजन खाता**

	(₹)		(₹)
बैंक (चुकाया)	71,000	शेष b/d	80,000
शेष c/d	1,05,000	लाभ–हानि खाता	96,000
	1,76,000		1,76,000

2. **विनियोग खाता**

	(₹)		(₹)
शेष b/d	2,40,000	बैंक खाता (शेष राशि)	35,000
लाभ हानि (बिक्री पर लाभ)	15,000	शेष c/d	2,20,000
	2,55,000		2,55,000

3. **यंत्र व संयंत्र खाता**

	(₹)		(₹)
शेष b/d	6,00,000	बैंक (बिक्री)	36,000
बैंक खाता (क्रय शेष राशि)	2,25,000	लाभ व हानि खाता (विक्रय पर हानि)	9,000
		मूल्य ह्रास	1,20,000
		शेष c/d	6,60,000
	8,25,000		8,25,000

नोट : यह माना गया है कि ऋणपत्र का वर्ष के प्रारंभ में शोधन किया गया है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(ii) **कार्यशील पूंजी में परिवर्तन तालिका**

विवरण	31 मार्च		कार्यशील पूंजी में परिवर्तन	
	2014 (₹)	2015 (₹)	वृद्धि (₹)	कमी (₹)
चालू सम्पत्तियां				
स्टॉक	4,00,000	3,85,000	--	15,000
देनदार	2,88,000	4,15,000	1,27,000	--
पूर्वदत्त व्यय	15,000	11,000	--	4,000
रोकड़ तथा बैंक	88,000	93,000	5,000	--
कुल (A)	7,91,000	9,04,000		
चालू दायित्व				
लेनदार	1,85,000	2,15,000	--	30,000
कुल (B)	1,85,000	2,15,000		
कार्यशील पूंजी (A – B)	6,06,000	6,89,000		
कार्यशील पूंजी में वृद्धि	83,000	--	--	83,000
	6,89,000	6,89,000	1,32,000	1,32,000

4. (अ) अतिरिक्त वित्त जुटाने का स्वरूप

समता = 10,00,000 × 60 ⁄ 100 = ₹ 6,00,000

ऋण = 10,00,000 × 40 ⁄ 100 = ₹ 4,00,000

अतिरिक्त वित्त जुटाने के पश्चात् पूंजी संरचना

कोष का स्रोत	राशि (₹)
अंशधारियों का कोष	
समता पूंजी (6,00,000 – 3,00,000)	3,00,000
प्रतिधारित अर्जनें	3,00,000
10% प्रति वर्ष पर ऋण	1,80,000
16% प्रति वर्ष पर ऋण (4,00,000 – 1,80,000)	2,20,000
कुल कोष	10,00,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

(ब) अतिरिक्त वित्त की कर पश्चात् औसत लागत

$K_d = I (1 – t)$, जहां 'K_d' ऋण की लागत, 'I' ब्याज तथा 't' कर।

₹ 1,80,000 पर = 10% (1 – 0.5) = 5% or 0.05

₹ 2,20,000 पर = 16% (1 – 0.5) = 8% or 0.08

ऋण की औसत लागत (कर पश्चात्) अर्थात्

$$K_d = \frac{(1,80,000 \times 0.05) + (2,20,000 \times 0.08)}{4,00,000} \times 100$$

$$= 6.65\% \text{ (लगभग)}$$

(स) लाभांश वृद्धि मॉडल लागू करते हुए प्रतिधारित अर्जनों की लागत तथा समता की लागत

$$K_e = \frac{D_1}{P_0} + g \qquad \text{या} \quad \frac{D_0(1+g)}{P_0} + g$$

तब, $$K_e = \frac{2(1.1)}{44} + 0.10$$

$$= \frac{2.2}{44} + 0.10 = 0.15 \text{ या } 15\%$$

(द) पूंजी की सम्पूर्ण भारित औसत लागत (WACC) (कर पश्चात्)

विवरण	राशि (₹)	भार	पूंजी की लागत	पूंजी की भारित औसत लागत
समता (प्रतिधारित अर्जनों सहित)	6,00,000	0.60	15%	9.00
ऋण	4,00,000	0.40	6.65%	2.66
कुल	10,00,000	1.00		11.66

5. (i) **शुद्ध आय दृष्टिकोण के तहत मूल्यांकन**

विवरण	P राशि (₹)	Q राशि (₹)
ब्याज तथा कर पूर्व आय (EBIT) (₹ 30,00,000 का 20%)	6,00,000	6,00,000
घटाएं : ब्याज (₹ 18,00,000 का 10%)	1,80,000	
कर पूर्व आय (EBT)	4,20,000	6,00,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

घटाएं : कर @ 50%	2,10,000	3,00,000
कर पश्चात् आय (EAT) (समता धारियों को उपलब्ध)	2,10,000	3,00,000
समता का मूल्य (पूंजीकरण @ 15%)	14,00,000 (2,10,000 × 100/15)	20,00,000 (3,00,000 × 100/15)
जोड़े : ऋण का कुल मूल्य	18,00,000	Nil
कम्पनी का कुल मूल्य	32,00,000	20,00,000

(ii) **शुद्ध परिचालन आय दृष्टिकोण के तहत कम्पनियों का मूल्यांकन**

विवरण	**P राशि (₹)**	**Q राशि (₹)**
15% आय का पूंजीकरण $\left(\frac{6,00,000(1-0.5)}{0.15}\right)$	20,00,000	20,00,000
घटाएं : ऋण का मूल्य {18,00,000 (1 – 0.5)}	9,00,000	Nil
समता का मूल्य	11,00,000	20,00,000
जोड़े : ऋण का कुल मूल्य	18,00,000	Nil
कम्पनी का कुल मूल्य	29,00,000	20,00,000

6. **आय विवरण**

विवरण	**राशि (₹)**
बिक्री	75,00,000
घटाएं : परिवर्तनशील लागत (75,00,000 का 56%)	42,00,000
अंशदान	33,00,000
घटाएं : स्थिर लागतें	6,00,000
ब्याज तथा कर पूर्व आय (EBIT)	27,00,000
घटाएं : ऋण पर ब्याज (@ ₹ 45 लाख पर 9%)	4,05,000
कर पूर्व आय (EBT)	22,95,000

(i) $$ROI = \frac{EBIT}{\text{विनियोजित पूंजी}} \times 100$$

© The Institute of Chartered Accountants of India

$$= \frac{\text{EBIT}}{\text{समता} + \text{ऋण}} \times 100$$

$$= \frac{27,00,000}{55,00,000 + 45,00,000} \times 100 = 27\%$$

(ROI की गणना विनियोजित पूंजी पर)

(ii) ROI = 27% तथा ऋण पर ब्याज 9% है अतः यह अनुकूल वित्तीय उत्तोलक है।

(iii) $$\text{पूंजी आवर्त} = \frac{\text{शुद्ध बिक्री}}{\text{पूंजी}}$$

$$= \frac{75,00,000}{1,00,00,000} = 0.75$$

जो उद्योग के औसत 3 की तुलना में बहुत कम है।

(iv) **परिचालन, वित्तीय तथा संयुक्त उत्तोलकों की गणना**

(अ) $$\text{परिचालन उत्तोलक} = \frac{\text{अंशदान}}{\text{EBIT}} = \frac{33,00,000}{27,00,000} = 1.22 \text{ (लगभग)}$$

(ब) $$\text{वित्तीय उत्तोलक} = \frac{\text{EBIT}}{\text{EBIT}} = \frac{27,00,000}{22,95,000} = 1.18 \text{ (लगभग)}$$

(स) $$\text{संयुक्त उत्तोलक} = \frac{\text{अंशदान}}{\text{EBIT}} = \frac{33,00,000}{22,95,000} = 1.44 \text{ (लगभग)}$$

या = परिचालन उत्तोलक × वित्तीय उत्तोलक

= 1.22 × 1.18 = 1.44 (लगभग)

(v) परिचालन उत्तोलक 1.22 है। अतः यदि बिक्री 10% से बढ़ती है, EBIT में 1.22 × 10 अर्थात 12.20% (लगभग) से वृद्धि होगी।

(vi) चूंकि संयुक्त उत्तोलक 1.44 है, EBT को शून्य लाने को बिक्री 100 / 1.44 अर्थात् 69.44% तक घटेगी।

तद्नुरूप, नयी बिक्री = ₹ 75,00,000 × (1−0.6944)

= 75,00,000 × 0.3056

= 22,92,000 (लगभग)

अतः ₹ 22,92,000 के विक्रय स्तर पर फर्म की EBT शून्य के बराबर होगी।

(vii) वित्तीय उत्तोलक 1.18 है। अतः यदि EBIT 20% से बढ़ती है तब EBT 1.18 × 20 = 23.6% (लगभग) से बढ़ेगी।

© The Institute of Chartered Accountants of India

7. चूंकि प्रत्येक मशीन का जीवन काल भिन्न है तथा समय अवधि प्रत्येक मॉडल के उपयोगी जीवन से अधिक है। हम यह सुनिश्चित करने को कि कौन से मॉडल का चुनाव करना चाहिए। समतुल्य वार्षिक लागत विधि का उपयोग करेंगे।

(i) **यदि मशीन 20 वर्षों के लिये उपयोगी होती है**

लागत का वर्तमान मूल्य (PV) यदि XYZ ब्राण्ड की मशीन खरीदी जाती है

अवधि	रोकड़ बहिर्वाह (₹)	PVF@12%	वर्तमान मूल्य
0	6,00,000	1.000	6,00,000
1-5	20,000	3.605	72,100
6-10	28,000	2.045	57,260
11-15	39,000	1.161	45,279
15	(64,000)	0.183	(11,712)
			7,62,927

1–15 वर्षों के लिये PVAF 6.811

समतुल्य वार्षिक लागत = $\frac{₹\,7,62,927}{6,811}$ = ₹ 1,12,014

लागत का वर्तमान मूल्य (PV) यदि ABC ब्राण्ड की मशीन खरीदी जाती है।

अवधि	रोकड़ बर्हिवाह (₹)	PVF@12%	वर्तमान मूल्य
0	4,50,000	1.000	4,50,000
1-5	31,000	3.605	1,11,755
6-10	53,000	2.045	1,08,385
10	(57,000)	0.322	(18,354)
			6,51,786

1–10 वर्षों के लिये PVAF 5.65

समतुल्य वार्षिक लागत = $\frac{₹\,6,51,786}{5.65}$ = ₹ 1,15,360

लागत का वर्तमान मूल्य (PV) यदि ABC ब्राण्ड की मशीन किराये पर ली जाती है

अवधि	रोकड़ बहिर्वाह (₹)	PVF@12%	वर्तमान मूल्य
0	1,02,000	1.000	1,02,000
1-4	1,02,500	3.037	3,11,293
5-9	1,09,950	2.291	2,51,895
			6,65,188

© The Institute of Chartered Accountants of India

1-10 वर्षों के लिये PVAF 5.65

समतुल्य वार्षिक लागत = $\frac{₹\ 6,65,188}{5.65}$ = ₹ 1,17,732

निर्णय : चूंकि समतुल्य वार्षिक रोकड़ बहिर्वाह XYZ ब्राण्ड की मशीन के क्रय की न्यूनतम है इसे क्रय करना चाहिए।

(ii) यदि मशीन 5 वर्षों के लिये उपयोग की जाती है।

(अ) XYZ ब्राण्ड मशीन का अवशिष्ट मूल्य

= ₹ 6,00,000 − ₹ 2,00,000 − ₹ 6,00,000 × 0.04 × 4 = ₹ 3,04,000

(ब) ABC ब्राण्ड मशीन का अवशिष्ट मूल्य

= ₹ 4,50,000 − ₹ 1,50,000 − ₹ 4,50,000 × 0.06 × 4 = ₹ 1,92,000

लागत का वर्तमान मूल्य (PV) यदि XYZ ब्राण्ड की मशीन खरीदी जाती है

अवधि	रोकड़ बहिर्वाह (₹)	PVF@12%	वर्तमान मूल्य
0	6,00,000	1.000	6,00,000
1-5	20,000	3.605	72,100
5	(3,04,000)	0.567	(1,72,368)
			4,99,732

लागत का वर्तमान मूल्य (PV) यदि ABC ब्राण्ड की मशीन खरीदी जाती है

अवधि	रोकड़ बहिर्वाह (₹)	PVF@12%	वर्तमान मूल्य
0	4,50,000	1.000	4,50,000
1-5	31,000	3.605	1,11,755
5	(1,92,000)	0.567	(1,08,864)
			4,52,891

लागत का वर्तमान मूल्य (PV) यदि ब्राण्ड ABC की मशीन किराये पर ली जाती है

अवधि	रोकड़ बहिर्वाह (₹)	PVF@ 12%	वर्तमान मूल्य
0	1,02,000	1.000	1,02,000
1-4	1,02,500	3.037	3,11,293
5	50,000	0.567	28,350
			4,41,643

निर्णय : ABC ब्राण्ड की मशीन को लीज की दशा में रोकड़ बर्हिवाह न्यूनतम है, इसे ही किराये पर लेना चाहिए।

© The Institute of Chartered Accountants of India

8. बट्टा स्वीकार करने पर वार्षिक लाभ

$$\frac{1.5}{100-1.50} \times \frac{365}{40-10}$$

$$= 18.53\%$$

वार्षिक लागत = विनियोग पर त्याग की गयी ब्याज की अवसर लागत = 15%

यदि औसत बीजक राशि ₹ 10,00,000 है।

	यदि बट्टा	
	स्वीकार होता है।	**स्वीकार नहीं होता है।**
आपूर्तिकर्ता को भुगतान	98,500	1,00,000
98,500 ₹ पर 30 दिनों का प्रत्याय {₹ 98,500 × (30/365) × 15%}		(1,214)
	98,500	98,786

अतः उपरोक्त तालिका से देखा जा सकता है कि बट्टे को स्वीकार करना सस्ता है।

9. कार्यशील टिप्पणियां :

1. कच्चा माल संग्रहण अवधि (R)

$$= \frac{\text{कच्चे माल का औसत स्टॉक}}{\text{कच्चे माल का वार्षिक उपभोग}} \times 365$$

$$= \frac{\frac{₹45,000 + ₹65,356}{2}}{3,79,644} \times 365$$

$$= 53 \text{ दिन}$$

कच्चे माल का वार्षिक उपयोग = प्रारंभिक स्टॉक + क्रय − अंतिम स्टॉक

$$= ₹ 45,000 + ₹ 4,00,000 - ₹ 65,356$$

$$= ₹ 3,79,644$$

2. **अर्द्धनिर्मित कार्य (WIP) रूपांतरण अवधि (W)**

$$\text{WIP रूपांतरण अवधि} = \frac{\text{WIP का औसत स्टॉक}}{\text{उत्पादन का वार्षिक उपभोग}} \times 365$$

$$= \frac{\frac{₹35,000 + ₹51,300}{2}}{₹ 7,50,000} ₹ 365$$

$$= 21 \text{ दिन}$$

© The Institute of Chartered Accountants of India

3. **निर्मित स्टॉक भण्डारण अवधि (F)**

$$= \frac{\text{निर्मित वस्तुओं का औसत स्टॉक}}{\text{बेचे गए माल की लागत}} \times 365$$

$$= \frac{₹\,65,178}{₹\,9,15,000} \times ₹\,365 = 26 \text{ दिन}$$

$$\text{औसत स्टॉक} = \frac{₹\,60,181 + ₹\,70,175}{2}$$

$$= ₹\,65,178$$

4. **देनदार संग्रहण अवधि (D)**

$$= \frac{\text{औसत देनदार}}{\text{वार्षिक उधार बिक्री}} \times 365$$

$$= \frac{₹\,1,23,561.50}{₹\,11,00,000} \times ₹\,365$$

$$= 41 \text{ दिन}$$

$$\text{औसत देनदार} = \frac{₹\,1,12,123 + ₹\,1,35,000}{2} = ₹\,1,23,561.50$$

5. **लेनदार भुगतान अवधि (C)**

$$= \frac{\text{औसत देनदार}}{\text{वार्षिक शुद्ध उधार क्रय}} \times 365$$

$$= \frac{\frac{₹\,50,079 + ₹\,70,469}{2}}{₹\,4,00,000} \times 365$$

$$= 55 \text{ दिन}$$

(i) **परिचालन चक्र अवधि**

= R + W + F+ D – C = 53 + 21 + 26 + 41 – 55 = 86 दिन

(ii) **वर्ष में परिचालन चक्रों की संख्या**

$$= \frac{365}{\text{परिचालन चक्र अवधि}} = \frac{365}{86} = 4.244$$

(iii) **आवश्यक कार्यशील पूंजी की राशि**

$$= \frac{\text{वार्षिक परिचालन लागत}}{\text{परिचालन चक्रों की संख्या}} = \frac{₹\,9,50,000}{4.244} = ₹\,2,23,845.42$$

© The Institute of Chartered Accountants of India

10. (अ) "लाभ अधिकतमीकरण एक परिचालन की व्यवहार्य कसौटी नहीं है।" यह कथन सत्य है क्योंकि लाभ अधिकतमीकरण किसी भी संगठन के लिये अल्पकालीन उद्देश्य हो सकता है तथा इसका प्रमुख उद्देश्य नहीं हो सकता। लाभ अधिकतमीकरण स्वामी के अधिकतम आर्थिक कल्याण के लिये परिचालन कसौटी के रूप में कार्य करने में असफल हो सकता है। यह उनकी आर्थिक कार्यकुशलता के रूप में वैकल्पिक कार्य की दशा की क्रमबद्धता के लिये परिचालन व्यवहार माप प्रदान करने में असफल रहता है। यह निम्नलिखित सीमाओं से पीड़ित है:

(i) **अस्पष्ट पदः** लाभ की परिभाषा अस्पष्ट है। क्या इसका अर्थ अल्पकालीन या दीर्घकालीन लाभ है? क्या यह कर पूर्व या कर पश्चात् लाभ बताता है? कुल लाभ या प्रति अंश लाभ?

(ii) **प्रत्याय का समयः** लाभ अधिकतमीकरण का उद्देश्य विभिन्न समयावधियों में प्राप्त प्रत्याय के मध्य अन्तर नहीं करता। यह मुद्रा का समय मूल्य पर विचार नहीं करता तथा आज प्राप्त लाभ एवं अवधि के पश्चात् प्राप्य लाभ के मूल्य को समान मानता है।

(iii) यह जोखिम तत्व को नजरअंदाज करता है।

(iv) अधिकतमीकरण पद भी अस्पष्ट है।

(ब) (i) **सेतु वित्त :** सामान्यतः सेतु वित्त व्यापार द्वारा लिये गये व्यापारिक ऋण को बताता है, आमतौर पर अल्प अवधि के लिये व्यापारिक बैंको से। वित्तीय संस्थाओं द्वारा सावधि ऋण की अनिर्णित अदायगी से। सामान्यतः, वित्तीय संस्थाओं को प्रतिभूति के सृजन की प्रक्रिया को अंतिम रूप देने, अन्य संस्थाओं के साथ सहभागिता जोड़ने में समय लगता है यद्यपि परियोजना का धनात्मक मूल्यांकन किया गया है। हालांकि, सैद्धांतिक रूप से एक बार ऋण स्वीकृत होने पर फर्म सेतु वित्त के लिये अपनी परियोजना को शुरू करने में अधिक समय खराब नहीं करती। सामान्यतया ऐसा अस्थायी ऋण का मुख्य सावधि ऋण की प्राप्तियों से भुगतान किया जाता है। यह चल सम्पत्तियों से, व्यक्तिगत गारंटी तथा मांग प्रतिज्ञा पत्रों के बंधक द्वारा सुरक्षित किया जाता है। सामान्यतया सेतु वित्त पर ब्याज की दर सावधि ऋणों की तुलना में अधिक होती है।

(ii) **फ्लोटिंग रेट बॉण्ड :** ये वे बॉण्ड हैं जहां ब्याज दर स्थिर नहीं होती तथा बाजार दशाओं पर निर्भर करते हुए चलायमान होती है। ये आदर्श उपकरण हैं जो जारीकर्ता द्वारा अपने आप को ब्याज दरों में उतार–चढ़ाव के विरुद्ध रोक को सहारा दिया जा सकता है। ये मुद्रा बाजार उपकरण के रूप में अधिक लोकप्रिय हुए है तथा वित्तीय संस्थाओं जैसे IDBI, ICICI इत्यादि द्वारा सफलतापूर्वक जारी किये गये हैं।

(iii) **पैकिंग साख :** पैकिंग साख बैंकों द्वारा निर्यातक को उपलब्ध कराया गया अग्रिम है। कोई भी निर्यातक, जिसके पास उसके विदेशी क्रेता द्वारा उसके

© The Institute of Chartered Accountants of India

पक्ष में खोली गयी साख का अखण्डीय पत्र सहित जारी किया गया निर्यात आदेश है, पैकिंग साख को प्राप्त करने के लिये बैंक से सम्पर्क कर सकता है। एक निर्यातक द्वारा स्वीकृत रूप में लिया गया ऐसा अग्रिम विचार–विमर्श द्वारा निर्यात बिल या निर्यात राशि की प्राप्ति के प्रारंभ होने की तिथि से 180 दिनों के भीतर चुकाना आवश्यक है। अतः पैकिंग साख आवश्यक रूप से एक अल्पकालीन अग्रिम है।

(स) जब 'स्थिर लागत कोष' की लागत निवेश पर प्रत्याय की तुलना में कम है, वित्तीय उत्तोलक समता पर प्रत्याय तथा EPS वृद्धि में सहायक है। फर्म को ऋणों पर ब्याज पर कर की बचत से लाभ भी होगा। हालांकि, जब ऋण की लागत प्रत्याय से अधिक होगी, तब समता की प्रत्याय तथा EPS को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करेगी तथा परिणामस्वरूप फर्म वित्तीय संकट के तहत हो सकती है। यह है, जिसके कारण वित्तीय उत्तोलक को "दुधारू तलवार" के रूप में जाना जाता है।

EPS तथा ROE पर प्रभाव :

जब	प्रभाव	परिणाम
ROI > ब्याज	अनुकूल	लाभ
ROI < ब्याज	प्रतिकूल	हानि
ROI = ब्याज	तटस्थ	न लाभ न हानि

© The Institute of Chartered Accountants of India